विचार बिन्दु

मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह उदार बनने से पहले त्यागी बने। -डिकेंस

बारिश में लगाएं औषधीय पौधे - सेहत को मिलेंगे अनगिनत फायदे

देश में मानसून प्रवेश कर चुका है। इसके साथ ही देशभर में जून से सितंबर तक चलने वाले चार महीनों के बरसाती सीजन की आधिकारिक शुरुआत होती है। मानसून अपने साथ अपार खुशियां लेकर आता है। लोगों को पीने के लिए जहाँ पानी मिलता है वहां किसान अपने खेतों में बुवाई शुरू कर देते है। इसी के साथ देशभर में पौधरोपण का कार्य भी शुरू हो जाता है। बरसात का मौसम पौधारोपण के लिए सबसे अनुकूल समय माना जाता है, क्योंकि इस दौरान मिट्टी में नमी भरपूर होती है और पौधों को तेजी से बढ़ने के लिए आवश्यक पोषक तत्व स्वाभाविक रूप से मिल जाते हैं। इस मौसम में लगाए गए पौधे आसानी से जड़ पकड़ लेते हैं और कम देखभाल में भी अच्छी वृद्धि करते हैं। मॉनसून का मौसम औषधीय पौधों को उगाने के लिए सबसे बेहतरीन है। हमारे बुजुर्ग कहते है हमें औषधीय पौधे अपने घरों पर लगाने चाहिए जो हमारे जीवन को नवजीवन प्रदान करेंगे। यह वह समय है जब हम पेड़ पौधे लगाकर देश को हराभरा बना सकते है। आयुर्वेद में बहुत से औषधीय पौधे और जड़ी-बूटियाँ शामिल हैं, जो हमारी विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं का प्रभावी ढंग से उपचार कर सकते हैं और हमारे समग्र स्वास्थ्य के लिए अच्छे साबित हो सकते हैं। ये पौधे प्राचीन काल से ही विभिन्न औषधीय प्रयोजनों के लिए उपयोग किए जाते रहे हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा में इन पौधों का उपयोग दवाई के रूप में किया जाता रहा है।

बताया जाता है एक वृक्ष अपने पूरे जीवन में हर तरह से मनुष्य के काम आता है। भोजन प्रदान करने, छाँव देने, घर बनाने को लकड़ी देने से लेकर सांसे लेने के लिये जीवनदायिनी ऑक्सीजन भी देता है। पेड़ पौधों को लेकर कई प्रकार के शोध होते रहते है। हर शोध में पेड़ पौधों को जीवनदाई बताया जाता है। हाल ही एक शोध रिपोर्ट में बताया गया की पेड़ पौधे बेहद संवेदनशील होते है। शोर से पेड़ पौधे मुरझा जाते है और उनकी ग्रोथ पर बुरा असर पड़ता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक लोगों की आयुर्वेदिक पौधों में रूचि बढ़ रही है। मानसून के आते ही लोगों के समक्ष यह दुविधा बन जाती है की इस मानसून में कौन से पौधे लगाएं जो मानव जीवन के लिए हितकारी हो। औषधीय पौधें इम्युनिटी बढ़ाने के साथ हमें विभिन्न प्रकार के रोगों से घर बैठे बचाता है। हमारे बड़े बुजुर्ग आज भी हमें औषधीय पौधों की बात बताते है। बहुत से बड़े बुजुर्ग आज भी अंग्रेजी दवाओं का सेवन नहीं करते और अपने स्वास्थ्य के राज की बातें बताते नहीं थकते मगर अपनी भागदौड़ भरी लाइफ स्टाइल में स्वस्थ जीवन के मंत्र की बातें सुनना पसंद नहीं करते। फलस्वरूप विभिन्न शारीरिक रोगों को भोगते हुए जैसे तैसे अपने जीवन की गाड़ी को हांकते है। अपने घरों पर औषधीय पौधे लगाएं तो ये हमें प्राण वायु तो देते ही है साथ ही स्वस्थ जीवन की राह भी दिखाएंगे।

पेड़-पौधों और वनों से हमें एक नहीं अपितु अनेकों लाभ है। वन और जीवन दोनों एक-दूसरे पर आश्रित हैं। वनों से हमें शुद्ध ऑक्सीजन मिलता है और मनुष्य और अन्य किसी भी प्राणी का जीवन ऑक्सीजन के बिना नहीं चल सकता। वृक्ष और वन भू-जल को भी संरक्षित करते हैं। जैव-विविधता की रक्षा भी वनों की रक्षा से ही संभव है। विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए बहुमूल्य वनौषधियां हमें जंगलों से ही मिलती हैं।

पेड़-पौधे हमारे शरीर में होने वाली विभिन्न बीमारियों से छुटकारा दिलाने के लिए हमें बहुत कुछ दे सकते हैं। प्राचीन काल में मानव ने तरह-तरह के पेड़-पौधों की खोज कर खुद को निरोगी रखा। मानव सभ्यता के विकास के साथ विज्ञान ने हमें नयीनयी ऊंचाइयों तक पहुँचाया, इसमें कोई दो राय नहीं है मगर औषधीय पौधों की महत्ता कभी कम नहीं हुई। भारत में औषधीय गुण वाले असंख्य पेड़-पौधे हैं। भारतीय पुराणों, उपनिषदों, रामायण एवं महाभारत जैसे प्रमाणिक ठांथों में इसके उपयोग के अनेक साक्ष्य मिलते हैं। रामायण में संजीवनी बूटी की चर्चा आज भी घर-घर में सुनी जा सकती है। बहुत सारी अंग्रेजी दवाइयों में आज भी औषधीय पौधों का मिश्रण किया जाता है। सर्दी, जुकाम, बुखार, बीपी, शुगर, उलटी दस्त जैसी सामान्य बीमारियों से लेकर कैंसर जैसी असाध्य बीमारियों का इलाज भी हमारे औषधीय पौधों में है। यदि इन पेड़ पौधों का हम उचित रखरखाव कर विभिन्न रोगों के इलाज में सही ढंग से उपयोग करें तो ये हमारे स्वस्थ जीवन के लिए बेहद लाभदायक हो सकते है।

औषधीय एवं सुरभित पौधे हमारी धरोहर हैं जिनका वैश्विक महत्व है। विश्व में असंख्य औषधीय एवं सुरभित पौधों की प्रजातियाँ हैं। उनमें से अनेक पौधों का उपयोग हम विभिन्न कारणों से करते हैं और अनेक हमसे अपरिचित हैं। भारत के रेड डाटा बुक में 427 संकटग्रस्त पौधों के नाम दर्ज हैं, इनमें से 28 लुप्त, 124 संकटग्रस्त, 81 नाजुक दशा में, 100 दुर्लभ तथा अन्य पौधे हैं। पारम्परिक औषधि का कोई विपरीत प्रभाव न होने के कारण तथा स्वस्थ जीवन शैली के लिए वर्तमान समय में भी इनका महत्व काफी अधिक बढ़ गया है। अभी भी विकसित देशों में 80 प्रतिशत जनसख्या पारम्परिक औषधीय ज्ञान पर ही निर्भर करती हैं। भारत के पहाड़ी और जंगली इलाकों में उपलब्ध तीन सौ से अधिक औषधीय वनस्पतियों की प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर है। अगर सरकार इनके संरक्षण की दिशा में पहल नहीं करेगी तो आने वाले वर्षों में कई वनस्पतियां विलुप्त हो जाएंगी। सरकार यदि इनके संरक्षण की दिशा में पहल नहीं करेगी तो आने वाले वर्षों में कई वनस्पतियां विलुप्त हो जाएंगी।

हमारे विभिन्न ग्रंथों और प्राचीन पुस्तकों में हजारों ऐसे नुक्खे बताये गए है जो औषधीय पौधों से निकले है। हमारे देश में आज भी लाखों लोग इन नुक्खों का उपयोग करते है। नीम, तुलसी, बेंग साग, ब्राम्ही, हल्दी, चन्दन, चिरायता, अडूसारू, सदाबहार, गुलाब, सहिजन, हडजोरा, करीपत्ता, लहसून, एलोवीरालेवेंडर, जीरा, पुदीना, गिलोय, सूरजमुखी, पीपल, आक, बरगद, आंवला, गूगल, अदरखनीम्बू, पत्थरचूर, शतावर, अजवायन, चुकंदर, चिरचिटी, कुल्थी, घृतकुमारी, करेला, पिपली, मेथी, पुनर्नवा, मदन मस्त, पिपली, चंपा, रजनीगंधा, श्वेत अपराजिता, सर्पगन्धा, अशोक और वलाक आदि औषधीय पौधों में से बहुत से ऐसे भी है जो घरों में लगाए जा सकते है। इनमें बहुत सी प्रजातियां अब लुप्तप्राय है। आवश्यकता इस बात की है इन बहु गुणकारी औषधीय पौधों के विकास की योजनाएं बनाकर आम आदमी को इनके प्रयोग और उपयोग की जानकारी दी जाएं।

पेड़-पौधों और वनों से हमें एक नहीं अपितु अनेकों लाभ है। वन और जीवन दोनों एक-दूसरे पर आश्रित हैं। वनों से हमें शुद्ध ऑक्सीजन मिलता है और मनुष्य और अन्य किसी भी प्राणी का जीवन ऑक्सीजन के बिना नहीं चल सकता। वृक्ष और वन भू-जल को भी संरक्षित करते हैं। जैव-विविधता की रक्षा भी वनों की रक्षा से ही संभव है। विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए बहुमूल्य वनौषधियां हमें जंगलों से ही मिलती हैं। दुनिया में जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिक विकास और आधुनिक जीवन शैली की वजह से प्राकृतिक वनों पर मानव समाज का दबाव बढ़ता जा रहा है। इसे ध्यान में रखकर मानव जीवन की आवश्यकताओं के हिसाब से वनों के संतुलित दोहन तथा नये जंगल लगाने के लिए भी विशेष रूप से काम करने की जरूरत है।

-अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल गुरूवार 11 जून, 2026

पंडित अनिल शर्मा

द्वितीय ज्येष्ठ मास (अधिक), कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2083, रेवती नक्षत्र प्रातः 8:16 तक, शोभन योग रात्रि 1:00 तक, बव करण दिन 11:47 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 8:16 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मीन, मंगल-मेष, बुध-मिथुन, गुरू-मिथुन, शुक्र-कर्क शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से आरम्भ होगा। आज कमला पुरूषोत्तम एकादशी व्रत है। पंचक प्रातः 8:16 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 7:19 तक, चर 10:44 से 12:26 तक, लाभ अमृत 12:26 से 3:51 तक, शुभ 5:34 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:36, सूर्यास्त 7:16

मेष

वर्तमान में चल रही परेशानियां दूर होने लगेगी। मानसिक तनाव दूर होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। मित्रों/रिश्तेदारों अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

मिथुन

आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर-परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

सिंह

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

तुला

व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आज नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

धनु

व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मकर

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कुंभ

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है।

मीन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्य आज शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

विश्वास, विकास और जनकल्याण के 12 वर्ष : विकसित भारत के शिल्पकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

आज जब देश ''विकसित भारत-2047'' के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है, तब इन 12 वर्षों की उपलब्धियां उसकी मजबूत आधारशिला के रूप में हमारे सामने हैं

भजनलाल शर्मा

भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में गत 12 वर्ष एक परिवर्तनकारी युग रहे हैं। यह कालखंड राष्ट्रीय परिवर्तन का पर्याय बन गया है। मई 2014 से प्रारंभ हुई यह यात्रा आज विश्वास, विकास और जनकल्याण की एक ऐसी गाथा बन चुकी है, जिसने भारत को नई ऊर्जा, नई पहचान और नए आत्मविश्वास से भर दिया है।

प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार के सफल 12 वर्ष 140 करोड़ भारतीयों के सपनों, आकांक्षाओं और विश्वास की विजय के प्रतीक हैं। इन 12 वर्षों में भारत ने गरीब कल्याण से लेकर वैश्विक नेतृत्व तक, डिजिटल क्रांति से लेकर आधारभूत संरचना के अभूतपूर्व विस्तार तक, आत्मनिर्भरता से लेकर सांस्कृतिक पुनर्जागरण तक अनेक ऐतिहासिक उपलब्धियां अर्जित की हैं। मोदी जी ने शासन को केवल सत्ता का माध्यम नहीं, बल्कि सेवा और जनभागीदारी का अभियान बनाया। ''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास'' का मंत्र आज देश के विकास का आधार बन चुका है। उन्होंने विकास के केंद्र में गरीब, वंचित और अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को रखा है। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के माध्यम से आज 80 करोड़ से अधिक लोगों को प्रतिमाह निःशुल्क खाद्यान्न उपलब्ध कराया जा रहा है।

प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत देशभर में 4 करोड़ से अधिक गरीब परिवारों को पक्के घरों की स्वीकृति मिली है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत 11 करोड़ से अधिक शौचालयों के निर्माण से 60 करोड़ से अधिक लोगों को खुले में शौच की विवशता से मुक्ति मिली।

उज्ज्वला योजना के माध्यम से 10 करोड़ से अधिक महिलाओं को निःशुल्क गैस कनेक्शन प्रदान किए गए। यह करोड़ों माताओं-बहनों के स्वास्थ्य, सम्मान और जीवन की गुणवत्ता में सुधार का अभियान बना। प्रधानमंत्री जनधन योजना ने वित्तीय समावेशन का नया अध्याय लिखा है। आज देश में 55 करोड़ से अधिक जनधन खाते खुल चुके हैं। इन खातों में 3 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि जमा है।

जनधन, आधार और मोबाइल की त्रिशक्ति ने शासन व्यवस्था में पारदर्शिता का नया युग प्रारंभ किया। डीबीटी के माध्यम से अब तक 40 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि सीधे लाभार्थियों के खातों में पहुंचाई गई है। इससे भ्रष्टाचार, बिचौलियों और फर्जी लाभार्थियों की व्यवस्था पर प्रभावी अंकुश लगा है। मोदी जी ने डिजिटल तकनीक को सामाजिक परिवर्तन का साधन बनाया। यूपीआई के माध्यम से प्रतिमाह 18 अरब डिजिटल लेनदेन हो रहे हैं और भारत विश्व का सबसे बड़ा रियल-टाइम डिजिटल भुगतान करने वाला बन चुका है।

भारत की आत्मा गांवों और किसानों में बसती है। भारतनेट परियोजना के माध्यम से 2 लाख से अधिक ग्राम पंचायतों को ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क से जोड़ा गया है। डिजिटल शिक्षा, ई-गवर्नेंस, टेलीमेडिसिन और ऑनलाइन सेवाओं ने गांव और शहर के बीच की दूरी को कम किया है। प्रधानमंत्री ने किसानों को सम्मान और सुरक्षा दोनों प्रदान करने का कार्य किया है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत 11 करोड़ से अधिक किसानों के खातों में 3.75 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि सीधे हस्तांतरित की जा चुकी है। फसल बीमा, किसान क्रेडिट कार्ड और न्यूनतम समर्थन मूल्य पर रिकॉर्ड खरीद ने किसानों को आर्थिक मजबूती प्रदान की है।

प्रधानमंत्रा मोदी ने महिलाओं को विकास की साझेदार बनाया है। आज 32 करोड़ से अधिक महिलाओं के जनधन खाते हैं। देश की 3 करोड़ से अधिक महिलाएं 'लखपति दीदी' अभियान से जुड़कर आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हैं। महिलाओं को सेना में स्थायी कमीशन, मातृत्व सुरक्षा, शिक्षा और स्वरोजगार के अवसर प्रदान कर उन्हें सशक्त बनाने हेतु ऐतिहासिक कदम उठाए गए हैं।

आयुष्मान भारत योजना विश्व की सबसे बड़ी स्वास्थ्य सुरक्षा योजना है। इसके अंतर्गत 60 करोड़ से अधिक लोगों को स्वास्थ्य कवरेज प्राप्त हुआ है। देश में 19 हजार से अधिक जनऔषधि केंद्रों के माध्यम से सस्ती दवाइयां उपलब्ध कराई जा रही हैं। कोविड सहित राष्ट्रव्यापी निःशुल्क टीकाकरण एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में मेडिकल कॉलेजों और सीटों की संख्या में रिकॉर्ड वृद्धि हुई है।

पिछले 12 वर्षों को भारत के आधारभूत संरचना विकास का स्वर्णिम काल कहा जा सकता है। राष्ट्रीय राजमार्गों की लंबाई लगभग 91 हजार किलोमीटर से बढ़कर 1.5 लाख किलोमीटर से अधिक हो चुकी है। एक्सप्रेस-वे नेटवर्क का तेजी से विस्तार हुआ है। रेलवे में रिकॉर्ड विद्युतीकरण हुआ है। हजारों किलोमीटर नए ट्रैक बिछाए गए हैं। देशभर में 164 'वंदे भारत और नमो भारत' ट्रेनें आधुनिक भारत की गति और प्रगति का प्रतीक बन चुकी हैं। विश्व का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज चिनाब रेल पुल भारत की इंजीनियरिंग क्षमता का गौरवशाली उदाहरण है। देश के 26 शहरों में 1,100 किलोमीटर से अधिक मेट्रो नेटवर्क विकसित किया जा चुका है।

जीएसटी स्वतंत्र भारत का सबसे बड़ा कर सुधार सिद्ध हुआ है। 'मेक इन इंडिया' और उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजनाओं ने विनिर्माण क्षेत्र को नई गति प्रदान की है। मोबाइल फोन निर्माण, इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात और रक्षा उत्पादन में भारत ने उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। रक्षा निर्यात वर्ष 2014 के लगभग 700 करोड़ रुपये से बढ़कर 25 हजार करोड़ रुपये से अधिक हो चुका है।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत ने अपनी सांस्कृतिक विरासत को नए आत्मविश्वास के साथ विश्व के सामने प्रस्तुत किया है। अयोध्या में प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर का निर्माण, काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर, महाकाल लोक और केदारनाथ धाम का पुनर्विकास भारतीय संस्कृति के गौरवशाली पुनर्जागरण के प्रतीक हैं। यह केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पर्यटन, स्थानीय अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय गौरव के सशक्त माध्यम भी हैं।

आज भारत केवल विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक शक्ति नहीं, बल्कि वैश्विक नेतृत्व का केंद्र भी बन रहा है। जी-20 की सफल अध्यक्षता, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसी पहलें और वैश्विक मुद्दों पर प्रभावशाली भूमिका इसकी पुष्टि करती हैं। पिछले दशक में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए हैं। इन राष्ट्रीय उपलब्धियों के साथ राजस्थान को भी प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में अभूतपूर्व विकास की सौगातें मिली हैं। आज राजस्थान विकास, निवेश, ऊर्जा और आधारभूत संरचना के क्षेत्र में देश के अग्रणी राज्यों में शामिल हो रहा है। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन और केंद्र सरकार के सहयोग से प्रदेश में अनेक ऐतिहासिक परियोजनाएं आकार ले रही हैं।

हाल ही में राजस्थान को 92,496 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं की सौगात मिली है। इनमें 79,459 करोड़ रुपये की एचपीसीएल राजस्थान रिफाइनरी और 13,037.66 करोड़ रुपये की जयपुर मेट्रो फेज-2 परियोजना उल्लेखनीय हैं। पचपदरा में विकसित हो रही 9 मिलियन मीट्रिक टन क्षमता वाली रिफाइनरी अर्थव्यवस्था को नई दिशा देगी और हजारों युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित करेगी। वहीं जयपुर मेट्रो फेज-2 राजधानी की परिवहन व्यवस्था में ऐतिहासिक बदलाव लाएगी।

सितंबर 2025 में प्रधानमंत्री मोदी ने माही-बांसवाड़ा परमाणु ऊर्जा परियोजना सहित एक लाख आठ हजार करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं का शुभारंभ किया। यह परियोजना राजस्थान की ऊर्जा सुरक्षा और औद्योगिक विकास को नई मजबूती प्रदान करेगी। आज राजस्थान सौर ऊर्जा उत्पादन में देश का अठाणी राज्य है और भड़ला सौर पार्क विश्व के सबसे बड़े सौर ऊर्जा पार्कं में शामिल है। राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट में 35 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। यह मोदी जी की विकासोन्मुख नीतियों और राजस्थान में बढ़ते निवेशक विश्वास का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

जल प्रबंधन के क्षेत्र में भी ऐतिहासिक उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं। जल जीवन मिशन के अंतर्गत केंद्र सरकार ने हाल ही में 4,800 करोड़ रुपये की अतिरिक्त राशि उपलब्ध कराई है। रामजल सेतु लिंक परियोजना के माध्यम से 17 जिलों के लगभग 3.25 करोड़ लोगों को पेयजल और सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी। चंबल नदी पर 2,330 करोड़ रुपये की लागत से बन रहा 2,280 मीटर लंबा रामजल सेतु प्रदेश की जल सुरक्षा का नया अध्याय लिख रहा है।

यमुना जल समझौते को आगे बढ़ाकर मोदी जी ने शेखावाटी क्षेत्र की दशकों पुरानी जल समस्या के समाधान का मार्ग प्रशस्त किया है। सीकर, झुंझुनूं और चूरू जिलों के लगभग तीन लाख किसानों को इसका लाभ मिलेगा।

भारतमाला परियोजना और दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे के माध्यम से राजस्थान में सड़क संपर्क का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है। राज्य के प्रमुख रेल मार्गों का विद्युतीकरण, दो वंदे भारत ट्रेनों की सौगात, अमृत भारत स्टेशन योजना से रेलवे स्टेशनों का आधुनिकीकरण तथा जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़ और जैसलमेर हवाई अड्डों का विस्तार राजस्थान को विकास के नए मानचित्र पर स्थापित कर रहा है।

आज राजस्थान की हजारों ग्राम पंचायतें भारतनेट परियोजना से जुड़ चुकी हैं। डिजिटल कनेक्टिविटी, ई-गवर्नेंस और ऑनलाइन सेवाओं का लाभ गांव-गांव तक पहुंच रहा है। आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्ज्वला योजना और किसान सम्मान निधि जैसी योजनाओं ने राजस्थान के लाखों परिवारों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बीते 12 वर्ष भारत के आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और समावेशी विकास के वर्ष रहे हैं। यह यात्रा केवल योजनाओं और परियोजनाओं की नहीं, बल्कि जनविश्वास, सुशासन और राष्ट्र निर्माण की यात्रा है। आज जब देश ''विकसित भारत-2047'' के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है, तब इन 12 वर्षों की उपलब्धियां उसकी मजबूत आधारशिला के रूप में हमारे सामने हैं। विश्वास के 12 वर्ष, विकास के 12 वर्ष, जनकल्याण के 12 वर्ष यही नए भारत की पहचान है। मोदी जी के नेतृत्व में भारत आने वाले वर्षों में विश्व की अग्रणी शक्तियों में अपना स्थान सुदृढ़ करेगा।

राजस्थान की 8 करोड़ जनता की ओर से मैं प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर हार्दिक बधाई देता हूं। उनका दूरदर्शी नेतृत्व, राष्ट्र प्रथम का संकल्प और सेवा के प्रति समर्पण विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने की प्रेरक शक्ति बना रहेगा।

-भजनलाल शर्मा,
मुख्यमंत्री, राजस्थान

चरित्र का बाज़ार और सफलता की अंधी दौड़ - कौन बनेगा चरित्रवान ?

प्रो. अशोक कुमार

जहाँ चरित्र की डिमांड ही नहीं है, वहाँ उसकी सप्लाई कैसे होगी, यह कड़वी टिप्पणी दिल को छूने वाली भी है और आज के समाज का एक सच भी। चरित्र के 'बाज़ार' का अर्थशास्त्र है-कि जहाँ डिमांड ही नहीं है, वहाँ सप्लाई कैसे होगी-वह पूरी व्यवस्था पर एक ज़ोरदार तमाचा है।

जब माता-पिता, शिक्षक, छात्र और खुद परीक्षा कराने वाली संस्थाएं शॉर्टकट और कामयाबी के पीछे अंधी हो जाएं, तो यह सवाल उठना लाज़मी है कि ''आखिर चरित्रवान कौन बनेगा और क्यों बनेगा?''

आज के दौर का सबसे बड़ा सच यही है कि चरित्र अब एक आउटडेटेड (पुराना) सिक्का बन चुका है, जो सफलता के आधुनिक मॉल में नहीं चलता। शिक्षा अब ज्ञान की साधना नहीं, बल्कि एक बाज़ार है, और इस बाज़ार का पहला नियम है- वही बेचो जिसकी डिमांड हो। आज डिमांड चरित्र की नहीं है; डिमांड रैंक की है, सरकारी सीट की है, करोड़ों के पैकेज की है। और जब डिमांड केवल परिणाम की हो, तो प्रक्रिया की पवित्रता अपने आप दम तोड़ देती है।

डिमांड और सप्लाई का खेलः जब माता-पिता ही खरीदार हों

एक बच्चा पैदा होते ही चरित्र का पाठ नहीं सीखता, वह अपने आस-पास के माहौल को देखता है। जब नीट जैसी परीक्षाओं के पेपर लीक होते हैं, तो लाखों-करोड़ों रुपये की डील होती है। यह पैसा किसी छात्र की जेब से नहीं आता; यह उसके अभिभावक देते हैं।

जो माता-पिता अपने बच्चे के भविष्य के लिए ईमानदारी की जगह लीक हुआ पेपर खरीदना बेहतर समझते हैं, वे अनजाने में अपने बच्चे को पहला सबक यही सिखाते हैं कि ''बेटा, चरित्र से पेट नहीं भरता, सफलता जैसे भी मिले, खरीद लो।'' ऐसे में वह बच्चा बड़ा होकर डॉक्टर तो बन सकता है, लेकिन इंसान नहीं।

अभिभावक आज इस बाज़ार की व्यवस्था में पूरी भूमिका निभाते हुए 1000 प्रति विषय प्रायोगिक परीक्षा हेतु चुपचाप जमा कर देते हैं ताकि बच्चे के 50 में से 48-49 नंबर आ सकें। अभिभावक शिक्षण संस्थानों से यह कभी पूछते ही नहीं कि प्रयोगशालाओं में साल भर प्रयोग हुए भी हैं या नहीं!

गुरु जब डीलर बन जाए और व्यवस्था की रीढ़ टूटे :-

शिक्षक को कभी राष्ट्र का निर्माता कहा जाता था। लेकिन जब पेपर तक पहुँच रखने वाले शिक्षक ही चंद रुपयों के लिए उसे लीक करने लगें, तो वे शिक्षक नहीं, शिक्षा के दलाल बन जाते हैं। जब गुरु ही चरित्र का सौदा करने लगे, तो शिष्यों से नैतिकता की उम्मीद करना बेईमानी है।

मज़ेदार बात यह है कि कुछ शिक्षक खुद 4 अलग-अलग लेखों की नकल करके एक नया लेख शोध पत्र लिखते हैं और उसी के दम पर उनका प्रमोशन हो जाता है। वहीं दूसरी तरफ, यदि कोई छात्र परीक्षा में नकल करता पकड़ा जाए, तो उसे 2 से 3 वर्ष के लिए परीक्षा से वंचित कर दिया जाता है। राष्ट्रीय उच्च शिक्षण संस्थानों में नैक के एक्रेडिटेशन में अच्छा ठोड पाने के लिए जब शिक्षक, अधिकारी और प्रशासन खुद नकली डॉक्यूमेंट तैयार करके जमा करते हैं, तब वे विद्यार्थियों को चरित्रवान होने का पाठ कैसे पढ़ाएंगे?

जब कुलगुरुओं / कुलपतियों की नियुक्ति का आधार आर्थिक, राजनीतिक या धार्मिक होगा तब वह छात्रों को चरित्र का क्या ज्ञान देंगे ।

राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी जैसी सरकारी संस्थाओं का काम सिर्फ परीक्षा कराना नहीं, बल्कि देश के युवाओं में व्यवस्था के प्रति विश्वास पैदा करना था। लेकिन बार-बार होने वाले पेपर लीक और ढुलमुल रवैये ने यह साबित कर दिया है कि सिस्टम की रीढ़ टूट चुकी है। जब सरकारी तंत्र ही शुचिता को बनाए रखने में नाकाम या उदासीन हो, तो आम नागरिक का चरित्र पर से विश्वास उठना स्वाभाविक है।

लाजवाब सवालः चरित्र आखिर है क्या? (एक वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण)

चरित्र वस्तुगत है या विषयगत ? क्या हर आदमी के लिए चरित्रवान की परिभाषा एक ही है? क्या यह पूरी तरह वैज्ञानिक है? या फिर व्यक्ति-व्यक्ति के लिए चरित्र की परिभाषा बदल जाती है? क्या अलग-अलग समाजों के लिए और समय-समय के साथ चरित्र की परिभाषा बदल जाती है?

इन सवालों की गहराई को समझें तो सच यही है कि चरित्र कोई स्थिर या ठोस वस्तु नहीं है जिसे तराजू पर तोला जा सके। जो बात एक समाज में चरित्रहीनता मानी जा सकती है, वही दूसरे समाज में सामान्य व्यवहार हो सकती है।

जो नियम सदियों पहले चरित्र का मापदंड थे, आज के आधुनिक और वैज्ञानिक युग में वे प्रासंगिक नहीं रहे।

यहाँ तक कि एक ही व्यवस्था में, एक गरीब के लिए भूख मिटाने के लिए की गई चोरी उसकी मजबूरी है, जबकि एक अमीर द्वारा करोड़ों का पेपर खरीदना उसका लालच है। दोनों के चरित्र को एक ही चश्मे से नहीं देखा जा सकता।

जब चरित्र की परिभाषा ही इतनी लचीली, समय-सापेक्ष और समाज-सापेक्ष हो, तो इस गिरते हुए दौर में यह और भी उलझ जाती है।

तो फिर चरित्रवान बनेगा कौन? और क्यों बने कोई?

जब परिभाषाएं इतनी जटिल हों और चारों तरफ गिरावट हो, तो सवाल फिर वही आता हैः ''जब कोई नहीं चाहता, तो मैं खुद चरित्रवान क्यों बनूँ?'' इसका जवाब यह है कि चरित्र की ज़रूरत समाज के लिए बाद में है, खुद के वजूद के लिए पहले है।

खोखली सफलता का डर : जो डॉक्टर पेपर खरीदकर बनेगा, वह कभी आत्मविश्वास से किसी मरीज का इलाज नहीं कर पाएगा। उसके भीतर का डर और अयोग्यता उसे हमेशा कचोटती रहेगी। चरित्रवान इंसान को किसी बाहरी सर्टिफिकेट की ज़रूरत नहीं होती, उसका खुद का ज़मीर उसका सबसे बड़ा जज होता है। अगर हर कोई यह सोचकर बेईमान हो जाए कि बाकी सब भी तो कर रहे हैं, तो समाज समाज नहीं, एक खूंखार जंगल बन जाएगा।

खुद से आँखें मिलाने की हिम्मतः सफलता आज है, कल नहीं। पैसा आज है, कल जा सकता है। लेकिन जब आप रात को आईने में खुद को देखें, तो अपनी आँखों में आँखें डालकर कह सकें कि ''मैंने जो भी हासिल किया, अपने दम पर किया, किसी का हक मारकर नहीं।'' यही चरित्र की असली कमाई है, चाहे इसकी परिभाषा समय के साथ कितनी भी बदल जाए।

निष्कर्ष :- बाज़ार बंद हो सकता है, आत्मा नहीं

यह बात शत-प्रतिशत सही है कि शिक्षा के इस बाज़ार में आज चरित्र की कोई डिमांड नहीं है। संस्थान रैंक बेच रहे हैं, चालाक लोग पेपर बेच रहे हैं, और अमीर लोग उसे खरीद रहे हैं।

लेकिन याद रखिए, बाज़ार वस्तुओं का होता है, इंसानी मूल्यों का नहीं। यदि व्यवस्था चरित्रवान नागरिक नहीं बनाना चाहती, तो यह ज़िम्मेदारी अब पूरी तरह व्यक्तिगत हो जाती है। चरित्रवान वह बनेगा, जिसके भीतर अभी भी थोड़ी सी गैरत बाकी है। जो भीड़ का हिस्सा बनकर सफल होने से बेहतर, अकेले खड़े होकर सच्चा रहना पसंद करता है।

शायद आज ऐसे लोगों की संख्या मुट्ठी भर हो, और समय व समाज के हिसाब से उनकी परिभाषाएं अलग हों, लेकिन दुनिया इन्हीं मुट्ठी भर ईमानदार लोगों के भरोसे टिक सकती है, उन कागज़ी डॉक्टरों, शिक्षकों या अफ़सरों के भरोसे नहीं जो मर्यादाएं बेचकर कुर्सियों पर बैठे हैं।

-प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति, कानपुर एवं गोरखपुर विश्वविद्यालय